eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 10, October 2025

सृष्टि विज्ञान–वैदिक वाङमय के सन्दर्भ में

डा० शुचि[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग) ला. म. प्र.व. बालिका महाविद्यालय, गोसाईंगंज, लखनऊ

Received: 25 Oct 2025 Accepted & Reviewed: 28 Oct 2025, Published: 31 Oct 2025

Abstract

वेदों का मूल विषय 'सृष्टि विज्ञान' या 'सृष्टि विद्या' हैं सृष्टि की उत्पति विषयक अवधारणा का प्रथम सुत्रपात 'नासदीय सूक्त' में प्राप्त होता है, जिसमें सृष्टि से सम्बन्धित अनेक कल्पानायें की गयी हैं। प्रजापति सृष्टि को बढ़ई के रूप में समानता करते हुये स्पष्ट किया गया कि जिस प्रकार कोई बढ़ई लकड़ी के उपकरणों को सजाकर भवन का निर्माण करता है ठीक उसी प्रकार प्रजापति ने विष्वकर्मा के रूप में इस सृष्टि का निर्माण किया है यह प्रजापति ही इंद्र, वायु और सूर्य के रूप में सम्पूजनीय है।

आप्राधावा पृथ्वी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्तुषष्च।

कूट शब्द– सृष्टि, उत्पत्ति, वैदिक वाङमय, नासदीय सूक्त, सृष्टि

Introduction

वेदों के अनुसार सृष्टि एवं प्रलय का एक निश्चित क्रम होता है विभिन्न कल्पों में प्रलय के पश्चात परमात्मा के मन में सृष्टि की पुनः रचना करने का संकल्प होता है। यही संकल्प सृष्टि ही है कि वह अपने संकल्प रूपी बीजों को स्वयं में ही स्थापित करता है इसी लिए उसे हिरण्यगर्भ कहा गया है। परमात्मा ही सृष्टि का उपादान एवं निमित्त दोनों ही कारण हैं वह अपनी शक्ति से ऋतू, सत्य, काल, परमाणुमय आकाश, दिन तथ रात्रि दिशाओं तथा ऋतुओं की भी सृष्टि करता है। वह अपनी प्रकृति से द्युलोक और पृथ्वी लोक का निर्माण करता हुआ 'एकोऽहम बहुस्याम्' के संकल्प को पूरा करता है। सृष्टि का सर्वप्रथम विश्वकर्मा परमात्मा ही है। विराट पुरूष के विभिन्न अवयव ही प्रकृति के विभिन्न उपादानों के कारणभूत है। नासदीय सूक्त में सृष्टि में सृष्टि प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन करते हुए कहा गया है। कि सृष्टि के प्रारम्भ में न तो सत् था न ही व्योम न ही रज अर्थात् परमाणु था ,न ही मृत्यु का भय था और न ही और न अनश्वरता थी वह एक स्वधा के द्वारा वायु के विना ही श्वास ले रहा था उसके अतिरक्ति कुछ भी नहीं था पहले अन्धकार से ढका अन्धकार ही था, वह सब चिन्ह बिहीन जल ही था जो व्यापक तत्व तुच्छ से ढका हुआ था वह एक तपस की महिमा से उन्पन्न हुआ–

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।

किमावरीवः कुह कस्य शर्मान्नमभः किमासीत् गहनं गभीरम्।।

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्रया अहन आसीत् प्रकेतः।

आनीदवातं स्वधया तदेकं स्माद्धान्यन्न परः किं च नास।।

तम आसीत्तमसा गूढमग्रेअप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।

तुच्छयेनाभ्वपहितं यदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकम्।।

ऋग्वेद 10–129

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 10, October 2025

इस मंत्र में प्रयुक्त "अप्रकेतम् सलिलं" पद से तात्पर्य है जल की मूल अवस्था अर्थात् रस तन्मात्रा से है इस जल तत्व की वैदिक अवधरणा का समर्थन तैत्तिरीय संहिता? शतपथ ब्राह्मण तथा बृहदारण्यक उपनिषद में भी कहा गया है।–

1. आपोह वा इदमग्रे सलिलमेवास। तैत्तरीय 05/7/5

2. शतपथ ब्राह्मण 11/1/61/1–2

3. आप एवेदग्र आसुस्ताः आपः सत्यमसृजन्त सत्यं ब्रहम, ब्रहम प्रजापतिम् बृहदारण्यक 05/5/1

मनुस्मृति में भी इसी बात का समर्थन करते हुए कहा गया है कि सृष्टि की इच्छा करने वाले उस ब्रह्मा ने अपने शरीर का ध्यान करके सबसे पहले जलो की सृष्टि की–

सोऽभिध्याय शरीरात् स्वात् सिस्रक्षुर्विविधा प्रजाः। अप एवं ससर्जादौ तासु बीजमेवासृजत्। **मनुस्मृति 1/6**

आधुनिक विज्ञान भी जल को ही प्राणिमात्र की उत्पत्ति का मूलाधार मानता है वैज्ञानिकों के अनुसार धरती के ठण्डा होने के तारतम्य में सर्वप्रथम जल ही था। जलं से जगत की उत्पत्ति के वैदिक सिद्धान्त के सम्बन्ध में महान दार्षनिक "थेल्स" ने जल से सर्ग की उत्पत्ति और जल में ही सृष्टि के लय के सिद्धान्त को ग्रीस में प्रचलित किया था।

छान्दोग्य उपनिषद में भी परब्रहम परमात्मा को उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय करने वाला होने के कारण उसे 'तज्जलानिति' कहा गया है– 'सर्व खल्विदं ब्रहम तज्जलानिति षान्ति उपासीत्'।

वैदिक सृष्टि विज्ञान में **हिरण्यगर्भ सूक्त** का भी महत्वपूर्ण स्थान है। हिरण्यगर्भ सूक्त में उल्लेख है कि पहले वह हिरण्यगर्भ ही विद्यामान था, जो कि प्राणिमात्र का एकमात्र अधिपति था उसी ने पृथ्वी एवं इस द्युलोक को धारण किया। इस प्रकार के उस सुखस्वरूप परमात्मा की हम हवि के द्वारा पूजा तथा उपासना करें।

हिरण्यगर्भः समवर्ततााग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

सदाधार पुथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ऋग्वेद 10/127

इसी मंत्र का उल्लेख यजुर्वेद में भी किया गया है। षतपथ ब्राह्मण में हिरण्यगर्भ को प्रजापति का वाचक कहा गया

1. यजूर्वेद अध्याय 13/4, 23/1,25/10

2. प्रजापतिर्वे हिरिण्यगर्भः शतपथ 6/2/2/5

आचार्य सायण ने भी हिरण्यगर्भ पद का अर्थ प्रजापति किया है हिरण्यमयस्य अण्डस्य गर्भभूतः प्रजापतिः।

ऋग्वेद10/121/1 सायण भाष्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी हिरण्यगर्भ का अर्थ प्रजापति एवं परमात्मा किया है।

यजुर्वेद में हिरण्यगर्भ के सम्बन्ध में कहा गया है कि वह प्रजापति समस्त संसार के अन्तर्गत गर्भ रुप में अन्तर्यामी होकर विचरण कर रहा है। 'प्रजापतिश्वरति गर्भेऽन्तः'

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 10, October 2025

यजुर्वेद 31/19

यो हिरण्यादीनां सूर्यादीनां तेजसां गर्भ उत्पत्तिनिमित्तधिकरणं स हिरण्यगर्भः।

सत्यार्थ प्रकाष प्रथम समुल्लास पृष्ठ9

ऋग्वेद में उल्लेख है कि सृष्टि से पूर्व सूक्ष्म कारण द्वारा विस्तृत कार्यरूप जगत ढका हुआ था तब वह एक तपस् की महिमा से उत्पन्न हुआ। अर्थात् प्रलयकाल में अपने मूल कारण के साथ एकीभूत जगत् तेजोमय चेतन परमात्मा की प्रेरणा से अपने कारण रूप से कार्य रूप में परिणत हो गया है।–

तुच्छयेनाभ्वपहितं यदासीत् तपस्रस्तन्महिनाजायतैकम्।

परमात्मा की वह तपस एवं ज्ञान षक्ति ही थी जिसने समस्त तमस को भेदकर ऋतम एवं सत्यम् की सर्जना की, जिसके फलस्वरुप प्रलय काल की अन्धकार भरी रात्रि उत्पन्न हुयी उसके बाद परमाणंओं का समुद्र अन्तरिक्ष प्रकट हुआ।

सांख्य सिद्धान्त प्र360 361

इसके बाद काल की सृष्टि होने लगी। सूर्य का आर्विभाव होने के पष्चात् संवत्सर, दिन तथा रात प्रारम्भ हुये और पहले की सृष्टि के समान ही सूर्य चन्द्रमा, द्युलोक, पृथ्वी तथा अन्तरिक्ष लोक प्रकट हुये। तथा वैदिक साहित्य में भूः भूवः स्वः महः जनः तपः एवं सत्यम् इन सात लोकों की सृष्टि एवं सृष्टि के नियम प्रारम्भ हुयें।

ऋतं च सत्य चाभींद्धात तपसोअध्यजायत्।

ततो रात्र्यजायत् ततः समुद्रो अर्णव।।

सूर्या चन्द्रमसौ धरती यथापूर्वम कल्पयन्

दिवं च पृथ्वी चान्तरिक्षमथों स्वः।

ऋग्वेद–10–190–1–3

परमात्मा ही सृष्टि का महानतम् विश्वकर्मा है उसी के विराट स्वरुप का उल्लेख पुरुष सूक्त में भी किया गया है कि वह हजार सिरों आंखों एवं हजार पैरों वाला सम्पूर्ण विष्व को चारों ओर से घेरकर रखा है।

सहस्रषीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विष्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दषांगुलम्।।

पुरुष सूक्त सृष्टि निर्माण को एक यज्ञ के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें पुरूा की बलि दी जाती है और उस पुरुष के अंग ही सृष्टि के विभिन्न अंग बन जाते है उसके मुख से ब्राह्मण की उत्पत्ति हुयी, दोनों भुजाओं से क्षत्रिय की, ऊरुओं से वैश्य की तथा चरणों से शूद्र की उत्पत्ति हुयी, उसके मन से चन्द्रमा, नेत्र से सूर्य, मुख से इन्द्र और अग्नि आदि तेजस तत्व, प्राणसे वायु अग्नि से अन्तरिक्ष सिर से द्युलोक पैरों से भूमि तथा कानों से दिषाएं उत्पन्ना हुयी।–

ब्राह्मणोंऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 10, October 2025

उरु तदस्य यदवैष्य पदभ्यां षूद्रोऽजायत्। **ऋग्वेद 10/119/12/13**

सृष्टि के प्रारम्भकाल की सर्वप्रथम घटना इन्द्र तथ वृत्र की मानी जाती है। कि ऐसा कहा जाता है कि वृत्र पर बज्र का संचालन न होता है तो प्रकृति का प्रारम्भिक संवेग न होता और जिसके अभाव में बिग बैंग भी नहीं हो सकता था वैज्ञानिकों का मत है कि द्रव्य मण्डल का विस्तार न होता और जिसके फलस्वरुप में भौतिक द्रव्य का तापमान हीं गिरता और न ही परमाणुओं और गैलेक्सी तथा लोकों ही रचना होती। अतः ये सभी तथ्य वैदिक विज्ञान तथा आधुनिक विज्ञान समर्थित है।

इस प्रकार वैदिक सूक्तों में सृष्टि के रचनाकार सर्वशक्तिमान परमेश्वर तथा सृष्टि के उपादान तत्व प्रंकृति तथा सृष्टि की उत्पत्ति के अनेक रहस्यों का संकेत दृष्टिगत होता है जिसके ऊपर वैज्ञानिकों ने अनेकों अनुसंधान किये है, जिसमें आत्मा के उत्थान और विकास का विज्ञान भी संयुक्त होने के कारण मनुष्यमात्र के लिए लाभदायक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. ऋग्वेद–1/115/1
2. ऋग्वेद भाष्य– स्वामीषरण–त्र्यम्बक प्रकाशन
3. वैदिक साहित्य का इतिहास–ंअं कुंवर लाल जैन भारतीय विद्या प्रकाशन
4. सृष्टि उत्पत्ति की वैदिक परिकल्पना–श्री विष्णुकान्तशास्त्री
5. बृह उप 0515101
6. मनु० 1/8
7. छा० उपनिषद्
8. ऋग्वेद–10/121
9. 19 0 10/121/1 सायण भाष्य